



www.clickveda.online

## आरती वृहस्पति देवता की

जय वृहस्पति देवा, ॐ जय वृहस्पति देवा ।  
छिन छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा ॥  
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।  
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी ॥  
चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता ।  
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ॥  
तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े ।  
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्घार खड़े ॥  
दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी ।  
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी ॥  
सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो ।  
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी ॥  
जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे ।  
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे ॥  
सब बोलो विष्णु भगवान की जय ।  
बोलो वृहस्पतिदेव भगवान की जय ॥'

www.clickveda.online